Vol 6 Issue 11 August 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 5.2331(UIF) Volume - 6 | Issue - 11 | august - 2017

Review Of Research

"हिन्दी बाल साहित्य में विज्ञान और अंधविश्वास "

Dr. Anita Patidar
Ph.D , M Phill , MA , BA [Hindi literature]

सारांश :

विज्ञान वर्तमान युग का अभिन्न अंग बन चुका है। आज वैज्ञानिक उपकरणों का बोलबाला है। विज्ञान के द्वारा ही हम बच्चो में वैज्ञानिक सोच विकसित कर अंधविश्वास एवं रूढ़ियों को तोड़ने की समझ पैदा करते है। आज हर देश अपनी नयी पीढ़ी को वैज्ञानिक शिक्षा देने पर जोर दे रहा है। ताकि आने वाले कल की पुख्ता बुनियाद रखी जा सके। विज्ञान के कई नये – नये अविष्कार हुए है। एसे रोचक अविष्कारों का बाल साहित्य को बच्चें बड़ें शौक से पढ़ते है। जैसे – अन्तरिक्ष विज्ञान , अन्तर्गहीत यात्रा , दूसरी दुनिया की कल्पना पर आधारित कहानियाँ भी बच्चों को रोमांचित करती है। विज्ञान परक कथा , कहानियों के द्वारा ही वैज्ञानिक ज्ञान का विकास , नवीनता के प्रति समझ , साथ ही सत् – असत् को परखने की एक नई दृष्टि प्रदान की जाती है। निः संदेह आज के वैज्ञानिक वातावरण ने ही बच्चों की बुद्धि में परिर्वतन कर अंधविश्वास को दूर करने की समझ पैदा की है। वैज्ञानिक कथाओं ने बच्चों के मिथ्या भ्रम को तोड़कर उन्हें सत्य की पहँचान भी कराई है।

Key Word → वर्तमान , वैज्ञानिक , उपकरण , अविष्कार , तकनीक , कल्पना , अन्तरिक्ष , अंधविश्वास

प्रस्तावना –

आज का युग विज्ञान का युग है। अब बच्चा राजा – रानियों तथा परीलोक से ऊपर उठकर वह चाँद पर जाना चाहता है। वह पूरे अन्तरिक्ष में घूमना चाहता है। वह फूलों से , पौधों से , पशु – पक्षियों से प्यार करता है तथा उनसे दोस्ती भी करना चाहता है। महिला बालसाहित्यकारों ने भी अपनी विज्ञान कथाओं के द्वारा बच्चों को चाँद , अंतरिक्ष , ग्रहलोक , विज्ञान के नये – नये आविष्कार आदि की सैर कराई है। वैज्ञानिक सूझ – बूझ जगाने वाली कथाओं ने बच्चों के मिथ्या भ्रम एवं भय को तोडकर उन्हें सत्य की पहचान भी कराई है। बाल विज्ञान साहित्य का सबसे बड़ा उद्देश्य मानवता के लिए विज्ञान के बढते खतरों के प्रति सजगता उत्पन्न करना है। अतः बच्चा उसका उपयोग विश्व कल्याण के लिए करे क्योंकि विज्ञान जहाँ वरदान है वहाँ अभिशाप भी बन जाता है। इस संदर्भ में डॉ. श्याम सिंह शशि कहते है कि – डॉ. शकुन्तला कालरा ने विज्ञान कथाओं को जादू की फैंटसी के साथ जोड़कर अभिनव – पथ अपनाया है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। उनकी कहानी "चमत्कार का रहस्य" हो या "आग का खेल" वे जादूगर अथवा मदारी के माध्यम से अंधविश्वासों पर प्रहार करती है और समाज को नई दिशा देती है। निश्चय ही इस प्रकार का साहित्य नई पीढ़ी के मानसिक स्वास्थ्य के लिए अभिष्ट होगा ।"[1]

चमत्कार का रहस्य –

इस विज्ञान परक कहानी संग्रह में लेखिका ने अंधविश्वासों को वैज्ञानिक सोच के साथ विकसित करने का प्रयास किया है। क्योंकि आज की तेज रफ्तार वाली जिन्दगी को विज्ञान ने बदल कर रख दिया है। आज जीवन में विज्ञान का स्थान बढ़ने से वैज्ञानिक उपकरणों से हमारा नाता जोड़ता जा रहा है। विज्ञान के सत्य के साथ – साथ साहित्य का रस भी प्रदान करने वाली ये रचनाएँ – 'चमत्कार का रहस्य' , 'नन्ही पूजा बड़ा फैसला' , 'शोर का दैत्य' , 'आग का खेल' , आदि बाल विज्ञान साहित्य की रचनाओं से वैज्ञानिक रूचि एंव सोच का विकास किया गया हैं। बाल विज्ञान साहित्य के द्वारा बाल – मन में उठने वाली हर जिज्ञासा को शांत करने का सरल एवं मनोरंजक ढंग से प्रयास किया गया है कि बच्चा विज्ञान के सत्य को बिना किसी बौद्धिक बोझिलता से ग्रहण कर ले।"जब पौटेशियम सल्फोसाइनाइड एवं फैरिक क्लोराइड आपस में मिलते है। तो रसायनिक प्रतिक्रिया करते है। तब खून के रंग जैसे निशान शरीर पर नजर आते है।"[2] बाल विज्ञान साहित्य में डॉ. शकुन्तला कालरा ने मदारी की असहायता पर सहानुभूति की दृष्टि डालते हुए उसे अजीविका कमाने वाले व्यक्ति के रूप में चित्रण किया है। जिसमें मुनिया उसकी सहायता करती हे। मदारी द्वारा मुनिया का पेट चाकू से काटने का प्रदर्शन या मदारी का लड़का जो आग से नहाता है। हमारे शरीर की त्वचा तीन सेकेण्ड तक 200 डिग्री सेन्टीग्रेट तक का ताप सहन कर सकती है। उस पर ताप का असर नहीं पडता। इससे ज्यादा समय अगर हम आग को त्वचा के सम्पर्क में रखते है तो त्वचा प्रभावित होकर जलने लगती है। इसलिए मदारी तीन सेकेण्ड से पहले ही मशाल को शरीर के दूसरे स्थान तक ले जाता था।[3] इन दोनों ही कहानियों में वैज्ञानिक प्रक्रिया को बहुत ही सफाई से दिखाने की कोशिश की गई है तथा डॉक्टर की बात पूजा बहुत ही सरलता से स्वीकार कर लेती है और अपना फैसला भी सूना देती है। इन विज्ञान कथाओं की बातों को बच्चे कितनी जल्दी समझ लेते है और मदारी बिना विज्ञान को समझे अपना अनुभव बता देता है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि लेखिका ने इस संग्रह में चमत्कार का रहस्य और आग का खेल में दोनों ही रचनाएँ विज्ञान कथाओं में खरी

उतरी है। जिसमें बच्चों की सोच जिज्ञासा को मजबूत बनाने का प्रयास करती हैं। लेखिका ने बाल विज्ञान साहित्य के माध्यम से मानवता के लिए विज्ञान के बढ़ते खतरों के प्रति सचेत करना तथा उसका उपयोग विश्व कल्याण के लिए हो जो आज के युग की माँग हैं।"इक्कीसवीं सदी एक मायने में जादुई कल्पनाओं एवं नवीन विचारों से भरी पूरी शताब्दी है। स्वभावतः इसमें बहुत कुछ पहले से भिन्न नया–नया सा है। विज्ञान और टेकनोलॉजी के चमत्कारों का प्रभाव है। नई–नई खोजों एवं आविष्कारों का भी प्रभाव है जो आदमी के जीवन को देखने, समझने और जीवन पद्धति को ढालने के लिए पर्याप्त है। इंटरनेट ने इस लम्बे–चौड़े जहान (जगत) को ग्लोबल गांव में तब्दील करके रख दिया है। आज तो बच्चों के खिलौने तक भी हाईटेक होते जा रहे है।"[4]

विज्ञान बच्चों के मन में आश्चर्य और रहस्य का मिश्रित भाव जगाता हैं। बच्चों का विज्ञान की बातें बताना सरल भी है और कठिन भी सरल इसलिए है कि विज्ञान सत्य और प्रमाणें पर आधारित होता है और विज्ञान के रहस्य किसी रोचक परीकथा और रहस्य से कम नहीं होता। विज्ञान के बढ़ते चरणों ने कोई भी जगह नहीं छोड़ी जिसके अन्तर्गत विज्ञान न आता हैं। चाहे फिर सब्जी उगाना हो, फल उगाना हो, या फिर अंतरिक्ष विज्ञान ही (अंतरिक्ष यात्रा) क्यों न हो। शरीर की जानकारी हो या सौर मंडल की सभी में उसने अपनी पैठ जमा ली हैं। बड़े लोगों के साथ बच्चों ने भी उसमें रूचि लेना प्रारंभ कर दिया जिसके कारण बाल विज्ञान साहित्य का सृजन हर दिशा में होने लगा है।

डॉ. बानों सरताज की "रात और दिन" एकांकी में बच्चों को विज्ञान के बारे में बहुत ही सरलता के साथ समझाया गया हैं क्योंकि बच्चों की विज्ञान में बहुत रूचि हैं। इस एकांकी के माध्यम से ग्रहो और तारों के बारे में बतलाया गया हैं। "रात और दिन" – "बबलू" : जो भाग प्रकाश में होता है वहाँ उस समय दिन होता है और जहाँ अंधेरा होता है वहाँ रात होती हैं।[5] "चमन चाचा : पृथ्वी का परिभ्रमण एक दम गोलाकार नहीं बल्कि अंडाकार है। इस तरह घूमने से पृथ्वी , कभी सूर्य के समीप और कभी दूर होती रहती है।"[6] लेखिका ने विज्ञान परक एकांकी को बहुत ही सरल भाषा में बच्चों के सामने प्रस्तुत की है। इस एकांकी में दिनरात कैसे बनते है ? का चित्रण किया है। बच्चे हमेशा यह सोचते है कि पृथ्वी कैसी है? रात और दिन बड़े–छोटे होते है? रात और दिन कैसे बने है? इन सभी प्रश्नों का समाधान इस छोटी सी एकांकी के द्वारा किया गया है। विज्ञान लेखन बहुत जटिल काम है , पर इस एकांकी के द्वारा लेखिका ने इसे रोचक एवं लोकप्रिय बनाया है।

वर्तमान शिक्षण तकनीक बालकों को अरूचिकर एवं कठिन लगती है। जिस कारण उनमें शिक्षा के प्रति एक भय पैदा होने लगता है। बालसाहित्यकार श्रीमती इन्दु पाराशर की पुस्तक 'कविता में विज्ञान' एक अभिनव प्रयोग है। बच्चों के लिए 10 भागों में लिखी गयी सरल कविताओं का संकलन है। इनमें सहजता से विज्ञान जैसे कठिन विषय को समझाया गया है। इन कविताओं का विषय हमारे आस–पास की वस्तुएं हैं। जिनमें मशीने, वायु, जल, उर्जा, हमारे शरीर के तंत्र, हमारे प्रतीक, सजीव–निर्जीव, बस स्टेंड, मृदा (मिट्टी), ऊष्मा, ध्वनि, ठोस, द्रव और गैस, पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा, चुंबक, पत्तियों का रूपांकन, दाब, कार्बन, विद्युतधारा, ज्वार–भाटा, पेड़, पौधों का भोजन, इंद्रधनुष, बादल–बिजली, धातुएँ और उनके गुण, यातायात के नियम, बीते समय की बातें आदि हैं, जिनमें रोचक ढंग से विभिन्न विषयों की जानकारी दी गई हैं। खगोल विज्ञान की जानकारी देने वाली पृथ्वी, सूर्य और चन्द्रमा कविता से उदाहरण प्रस्तुत है।

"सूरज है तारा धरती का, देता गर्मी और प्रकाश।
नौ ग्रह का इनका परिवार, करे परिक्रमा बारम्बार।
बुध, शुक, धरती, मंगल, गुरू, शनि, अरूण है इसमें।
नेप्चून और प्लूटो भी है, नहीं प्रकाश मगर इनमें।
नित्य ग्रहों के चक्कर काटे, उपग्रह वह कहलाता है।"[7]

"विज्ञान की उपलब्धियाँ"

"आज कई मंजिल इमारतें, जिनके अंदर लिफ्ट चलें।
आज बैलगाड़ी के बदले, प्लेन, ट्रेन, बस, कार, चलें,
दूर–दूर की खबरें हमकों, मिनिटों में मिल जाती है।"[8]
"हवा विशैली, वन का कटना, जन–जनसंख्या का विस्फोट।
जीना मुश्किल, हो जाएगा, इस पर, नहीं, लगी, यदि रोक।
परमाणु, रासायनिक अस्त्रों का, युद्ध हेतु होना उपयोग।
ओज़ोन गैस की परत टूटना, कीटनाशकों का उपयोग।"[9]

"चट्टाने, खनिज और धातुएँ"

"पृथ्वी में चट्टानें कितनी, चट्टानों में, मिनरल है,
मिनरल में, अनेक अवयव है, कई अणु है, परमाणु है।
पृथ्वी की ऊपरी परत में O_2 और सिलिकॉन मिलें।
एल्यूमीनियम, लोहा, कैल्शियम, सोडियम, पोटेशियम आदि मिलें।"[10]

इन्दु पाराशर की कविताएं बच्चों के लिए विज्ञान के नये–नये प्रयोग करती है जिससे
बच्चों को हर वस्तु के विज्ञान परक जानकारी दी हैं। जैसे ध्वनि कविता में ध्वनि कैसे पैदा होती है इसका प्रयोग बताया है।

ध्वनि –

"जब पदार्थ कण, कम्पन करते, तब ध्वनि होती है उत्पन्न।
घंटे को डंडे से मारो, आती है उससे टन–टन।
कम्पन वायु कंपित करते हैं, और पहुंचे कानों तक।
बिना माध्यम ध्वनि न पहुँचती, कभी हमारे कानों तक।"[11]

इन कविताओं के माध्यम से जीवन की गतिविधियों के बारे में सरलता से जानकारी दी गई हैं कि हमें ध्वनि कैसे सुनाई देती है का बड़ा ही सरल तरीका बतलाया है जिसे बच्चे भी बहुत जल्द समझ सकते है। इन छोटी–छोटी कविताओं में विज्ञान के रहस्यों को खोला गया हैं जिससे अंधविश्वास की दुनिया से बाहर निकल कर एक विज्ञान परक सोच का निर्माण होता है। इसी प्रवृत्ति को ध्यान में रख कर लेखिका ने बच्चों के लिए विज्ञान कविताएँ लिखी है, जिससे उनकी विज्ञान विषयक जिज्ञासाओं का समाधान हो सके। श्रीमती सविता गुप्ता ने विज्ञान से संबंधित छोटी–छोटी कहानी रूप में बच्चों को स्वास्थ संबंधी जानकारियाँ दी है जैसे– "पौधे हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी है। पौधों से हमें तथा अन्य जन्तुओं को भोजन मिलता है, जिससे वातावरण शुद्ध रहता है। बड़े वृक्षों से हमें छाया मिलती है तथा अन्य उपयोग की वस्तुएँ भी मिलती है।"[12]

"हमारे शरीर में छोटी–बड़ी 205 हड्डियाँ तथा 500 से अधिक मांसपेशियाँ है। मांसपेशियाँ हड्डियों के साथ जुड़ी रहती है। ये हमारे शरीर को कार्य करने में मदद करती है।"[13] "हमारे चारों ओर वायु ही वायु है। वायु का दुसरा नाम 'हवा' है। बिना हवा के हम एक क्षण भी जीवित नहीं रह सकते। वायु में हम साँस लेते हैं। वायु को हम देख नहीं सकते परन्तु इसका अनुभव कर सकजे है। वायु में कोई रंग नहीं होता और वायु में कोई गंध नहीं होती है।"[14] इन सब कहानियों का उद्देश्य है कि आज बच्चों को स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा देना बहुत आवश्यक है क्योंकि बच्चे ज्यादातर बाहर का खाना ही पसंद करते है। श्रीमती सविता गुप्ता ने विज्ञान के संदेश व शिक्षा का यह तानाबाना इस तरह पिरोया है कि बच्चे खेल–खेल में ये जानकारियाँ हासिल कर लेते है। विमल कुमारी की पुस्तक डॉ. जगदीशचन्द्र बोस प्रथम भारतीय वैज्ञानिक थे जिनका नाम भारत में ही नहीं पूरे विश्व में फैला है। उन्होंने वनस्पति विज्ञान व रेडियों तरंगों के गुणों पर ऐसे नए शोध किए जिससे विज्ञान–जगत में उथल–पुथल मच गई। डॉ. बोस ने विज्ञान में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। जैसे वनस्पति में जीवन है व ऐसे यंत्रों को बनाकर दिखाया जो हमारी आखों की देखने की शक्ति को दस लाख गुना बढ़ा कर अदृश्य वस्तु को दिखलाता है। डॉ. बोस ने ऐसा यत्न किया जिससे पेड़–पौधे अपना जीवन–वृतान्त व्यक्त कर सकें। उनकी खोजों को विद्युत विज्ञान, रेडियो, राडार नियन्त्रण अस्त्र, संगणक आदि के विकास में पर्याप्त योगदान माना जाता है। डॉ. बोस ने न केवल अपने कार्यों से भारत का नाम विज्ञान जगत् में उज्जवल किया बल्कि विदेशों में भी यह प्रभाव देखने को मिलता है।

वर्षा अग्रवाल ने जल, भूमि, वायु, पृथ्वी, संबंधी प्रदूषण मुक्त परिवेश निर्माण के लिए अनेक छोटी–छोटी मनोरंजक पुस्तकें लिखी हैं। पर्यावरण पर इनकी लगभग 20 पुस्तकें हैं। 'सारे सौरमण्डल में हमारी पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा ग्रह है जहाँ जीवन हैं। पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के जीव–जन्तु व प्राणी निवास करते हैं। जिनके जीवन के लिए सभी आवश्यक तत्व प्रकृति द्वारा पृथ्वी पर उपस्थित विभिन्न साधनों द्वारा उपलब्ध होते हैं जैसे–पहनने के लिए वस्त्र, खाने के लिए अन्न तथा फल, जलाने के लिए व रहने के लिए ईंधन तथा लड़की, जीने के लिए जल तथा साँस लेने के लिए स्वस्छ वायु के अतिरिक्त सभी जीव–जन्तु व प्राणियों की सभी मूल जरूरतें पृथ्वी से ही पूरी होती हैं।'[15] "जल को जीवन का आधार मानकर कहाँ भी गया है कि 'जल ही जीवन है' यदि वही जल जो जीवन है, प्रदूषित हो जाए तो किस प्रकार के जीवन की उत्पत्ति और विकास हो सकता है। क्यों न पहले उन कारणों का पता लगाया जाए जिससे जल प्रदूषित हो जाता है।"[16]

"जल, थल व आकाश में रहने वाले प्रत्येक जीवन को सांस लेने के लिए ऑक्सीजन के रूप में वायु की आवश्यकता होती जिसके अभाव में अथवा प्रदूषित हो जाने पर कोई भी जीवित प्राणी मर सकता है। हमारा वायुमण्डल अनेक गैसों से मिलकर बना है जिनमें कार्बनडाई ऑक्साईड, नाइट्रोजन, हाइड्रोजन, अमोनिया तथा सांस लेने के लिए ऑक्सीजन प्रमुख रूप से पायी जाती हैं। प्रकृति के चक्र के अनुसार वायुमण्डल में हानिकारक व लाभदायक सभी प्रकार की गैसों का समान सन्तुलन बना रहता हैं।"[17] हिन्दी के प्रसिद्ध कवि रहीम दास ने जल के विषय में लिखा हैं– 'रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।' इसका मतलब यह है कि जल के बिना कुछ भी संभव नहीं है। जल की एक–एक बूँद सोना है। बूँद–बूँद में जीवन हैं। जल के अभाव में जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। इस अमूल्यजल का हमें संरक्षण करना चाहिए। इसका अपव्यय होने से बचाना चाहिए। प्रकृति की ओर से जीवों को मिला यह अनुपम उपहार है। इस बहुमूल्य धरोहर का संरक्षण कर हम वर्तमान एवं भावी पीढ़ियों को सुखद, समृद्ध और खुशहाल रखते है।

वर्षा अग्रवाल की प्रस्तुत पुस्तकों का उद्देश्य हैं कि सार्वजनिक जागरूकता और पर्यावरण के प्रति चेतना से थल, जल व वायु प्रदूषण को रोका जाय जिसके लिए सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थायें व अन्य नागरिक सभी मिलकर इन प्रदूषणों को रोकने के उपायों पर अमल करके अपनी व भावी पीढ़ी के स्वास्थ्य तथा भविष्य की रक्षा कर सकते हैं। प्रकृति के ये सभी तत्व हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है कयोंकि इनके बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। जल ही जीवन है, इस बात को ध्यान में रखकर हमसब मिलकर अपने जीवन को बचायें। वर्तमान और भावी पीढ़ी को सुखद, समृद्ध व खुशहाल बनायें। लेखिका ने इन सब बातों पर विशेष ध्यान दिया है। जिससे बच्चों को इन अमूल्य धरोहर को बचाये रखने के उपाय मिल सके।

कुसुमलता सिंह की पुस्तक 'हाथी का सलाम एवं अन्य रोचक कहानियों' में बच्चों की कल्पना शक्ति को बढ़ाने के लिए विज्ञान एवं तकनीक के रहस्यों को सुलझाने का प्रयास किया है। बचपन में बच्चा यदि कुछ बनना चाहे तो वह अपनी मेहनत के बल पर बन सकता है जैसे ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कर दिखाया। एक आदमी ने कलाम को सिक्का उछालते देखा तो बोला, 'क्यों बेटा एक रूपए में हवाई जहाज खरीदोंगे क्या? कलाम ने कहा, "चाचा, मैं हवाई जहाज बनाना और उड़ाना चाहता हूँ। हाँ, कोई काम कठिन नहीं होता। मेहनत करोंगे तो जरूर एक दिन यह सपना सच होगा, वह बोला।"[18] इस बात का कलाम पर गहरा असर हुआ। विज्ञान और गणित उनके प्रिय विषय थे। उन्होंने एरोनाटिकल इंजीनियरिंग की उच्च शिक्षा प्राप्त की। बड़े होकर वे वैज्ञानिक बने। "उनकी बनाई मिसाइलों में त्रिशुल, अग्नि, आकाश और नाग प्रमुख हैं। ये मिसाइलें अपने देश की रक्षा के लिए बनी है। इसीलिए इन्हें शांति का उपकरण कहा जाता है।"[19] "ए.पी.जे. अब्दुल कलाम बच्चों को बहुत प्यार करते है। उनका सपना है कि भारत के हर बच्चे में वैज्ञानिक सोच हो। विज्ञान की छोटी–छोटी बातों से बच्चों में भी कुछ नया करने की सोच पैदा होगी और वे भविष्य में कुछ अच्छे नागरिक बनेगें। विज्ञान और दर्शन एक ही सिक्के के दो पहलू है, क्योंकि दोनों ही जीवन के प्रति जागरूकता व प्रकृति के प्रति चिनमयता के दृष्टिकोण पर टिकते हैं।"[20]

निष्कर्ष→

विज्ञान के द्वारा समाज भविष्य की ओर बढ़ता है इसके लिए मन की शक्तियों द्वारा लक्ष्य की ओर बढ़ना और उसी के अनुरूप आचरण करना अत्यन्त आवश्यक हैं। हमारा आधुनिक जीवन एक प्रकार से विज्ञान की ही देन है। आज का बालक कम्प्यूटर युग में साँस ले रहा है। विज्ञान के प्रयोग उसे आकर्षित करते है। वह आपने आस–पास के वातावरण को वास्तविक रूप में महसूस करना चाहता है। वह परिकथाओं, भूत–प्रेत, जिन्न, और उनकी जादुई दुनिया को अवास्तविक समझने लगा है। वह देवी–देवताओं के स्थान पर सुपरमेन, से अधिक प्रभावित होता हैं। कम्प्यूटर गेम की दुनिया में अधिक आनंद प्राप्त करता है इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए महिला बालसाहित्यकारों ने मानवीय जीवन मूल्यों को अपनी रचनायों में चित्रित किया हैं। इसके प्रभाव से एक नई वैज्ञानिक संस्कृति का जन्म हुआ है, जो सत्य, अहिंसा न्याय क्षमता और बंधुत्व के आदर्शों को नई दिशा में विकसित कर रही हैं। समाज में विज्ञान तार्किक बुद्धि का विकास करता है। धर्म में वैज्ञानिक दृष्टि पैदा करता है। विज्ञान कथाओं के द्वारा अनेक महिला बालसाहित्यकारों ने मनोरंजक रचनाओं के माध्यम से वैज्ञानिक चमत्कारों को केन्द्र में रखकर बालसाहित्य रचा है, जैसे –समुद्र विज्ञान, खगोल विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, कोशिकीय

विज्ञान, एक्सरे, रेडियोधर्मी किरणें, ज्वालामुखी एवं पराबैंगनी किरणें, पारदर्शी, अपारदर्शी, विद्युत धारा, ईधन आदि के साथ धरती के गर्भ में छिपे अनेक रहस्यों को अपनी रचना का विषय बनाया हैं। जिससे बच्चों को विस्तृत जानकारी मिल सकें।

संदर्भ सूची

1—3. चमत्कार का रहस्य, डॉ. शकुन्तला कालरा, पृ. सं. 4, 10 व 36
4.हिमप्रस्थ, नवंबर, 2010, रणजीत सिंह राणा, पृ. सं. 43
5—6.तीस एकांकी, डॉ बानो सरताज, पृ. स. 139, 141
7—11.कविता में विज्ञान, इन्दु पाराशर, पृ. सं. 11, 13, 17, 18, 29
12—14.आलोक विज्ञान भाग—4, श्रीमती सविता गुप्ता पृ. सं. 9, 28, 41
15.पृथ्वी प्रदूषण, वर्षा अग्रवाल पृ. सं. 3
16.जल प्रदूयण, वर्षा अग्रवाल पृ. सं. 5
17.वायु प्रदूषण, वर्षा अग्रवाल पृ. सं. 3
18—19.हाथी का सलाम एवं अन्य रोचक कहानियाँ, कुसुमलता सिंह, पृ. सं. 16, 18
20. सामयिक जीवन और साहित्य, डॉ. रारत्न भटनागर, पृ. सं. 58

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com